ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

सामाजिक समरसता के अवरोध एवं विसंगतियाँ

Obstacles and Anomalies of Social Harmony

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

एम. एल. पाटले
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शास. टी.सी.एल. स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जांजगीर, छ.ग., भारत

सारांश

हमारा देश विविधताओं का देश है। यहां पर निवास करने वाले लोग विविध धर्म, जाति, सम्प्रदाय पंथ एवं समूह के हैं। अतः उनके रीति–रिवाज, रहन–सहन, खान–पान, वेशभूष, भाषा–शैली एवं जीवन शैली भी भिन्न–भिन्न है। इन विभिन्नताओं के बावजूद राष्ट्रीय एकता के लिए एक सूत्र में बंधे हुए होते है। राष्ट्रीय विकास में देश के सभी लोग एक जैसी सोच रखें तो यह भाव राष्ट्र के विकास तथा देश भक्ति की भावना को बढ़ावा देता है। विभिन्न सभ्यता एवं संस्कृतियों के लोग आपसी मतभेद असमानताओं एवं विचारधाराओं से ऊपर उठकर राष्ट्र के समग्र विकास के लिए एकजुट होना चाहिए। विभाजित लोग तथा विखंडित समाज आसानी से बिखर जाते हैं। अलगाव तथा विघटन समाज में दरारें डालने का कार्य करता है। विघटनकारी ताकतों से समाज विभाजित हो जाता है और सामाजिक समरसता में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। राष्ट्र का विकास अवरूद्ध हो जाता है।

राष्ट्र के विकास में जातिवाद एक बहुत बड़ी बाधा है। भारत में विभिन्न जातियों से संबंधित मतभेद खुलकर देखने को मिल जाता है। एक जाति दूसरे जाति समूहों से खुद की जाति को सर्वश्रेष्ठ समझने लगती है फलस्वरूप समाज में विकृत रूप देखने को मिलता है। हमारे देश में विभन्न धर्मो के अनुयायियों के बीच एक दूसरे से वैचारिक मतभेद निहित स्वार्थो की वजह से होती है जो कि साम्प्रदायिकता की भावना को जन्म देती है। इस तरह से क्षेत्रवाद तथा प्रांतीयता भी अलगाव वादी पहलुओं को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय विकास के मार्ग में बाधक है। विभिन्न प्रदेशों में भाषाई अंतर भी राष्ट्रीय विकास तथा सामाजिक समरसता के मार्ग में बाधक है।

भारत के विकास में भ्रष्टाचार एवं कालाधन एक ज्वलंत समस्या है। भ्रष्टाचार एवं कालेधन के विरूद्ध सरकार द्वारा प्रभावी कदम उठाये गये हैं। भ्रष्टाचार से अर्जित धन का सीधा असर मंहगाई पर पड़ता है और व्यापक प्रभाव आर्थिक रूप से कमजोर लोगों पर पड़ता है। अतः हमें जातिवाद साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, भाषावाद से ऊपर उठकर राष्ट्रीय विकास के लिए दृढ़ संकल्पित होना चाहिए।

Our country is a country of diversities. The people residing here are of diverse religion, caste, sect, creed and group. Therefore, their customs, way of life, food, costumes, language and lifestyle are also different. Despite these variations, they are tied together in a formula for national unity. If all the people of the country have the same thinking in national development, then this feeling promotes the development of the nation and the spirit of patriotism. People from different civilizations and cultures should rise above mutual differences, inequalities and ideologies and unite for the overall development of the nation. Divided people and fragmented societies are easily shattered. Isolation and disintegration make cracks in the society. Disruptive forces divide society and disrupt social harmony. The development of the nation is blocked.

Casteism is a major obstacle in the development of the nation. In India, differences related to different castes can be seen openly. One caste starts to understand their own caste best from other caste groups and as a result a distorted look is seen in the society. The ideological differences between the followers of different religions in our country are due to vested interests which gives rise to the feeling of communalism. In this way, regionalism and provincialism also obstruct the path of national development by promoting the separatist aspects. The linguistic difference in different regions also hinders the path of national development and social harmony.

Corruption and black money is a burning problem in India's development. Effective steps have been taken by the government against corruption and black money. The money earned from corruption has a direct impact on inflation and the wider impact on the economically weaker people. Therefore, we should be determined to rise above casteism, communalism, regionalism, linguism and national development.

More about this source textSource text required for additional translation information

मुख्य शब्द : सामाजिक, समरसता, अवरोध, विसंगतियाँ।
Social, Harmony, Inhibition, Discrepancies.

प्रस्तावना

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के विश्वास की आधार शिला पर अवस्थित समाज का हर व्यक्ति स्वभावतः सुखी रहना चाहता है। परन्तु वास्तविकता इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति सदाचार और सदक्रियाओं के द्वारा उत्कृष्ट गुणों का विकास कितना कर सकता है? हमें जन्मना नहीं कर्मणा मानव के महत्व का पक्षधर होना चाहिए। मनुष्यों के बीच सही संतुलन एवं सामन्जस्य स्थापित होने से सम्प्रदाय जाति, वर्ण और राष्ट्र की दिवारें नष्ट हो जायेगी, तब सच्चे अर्थो में संपूर्ण मानवता की जीत होगी। अपने सद्कार्यो से मनुष्य जीवन में उंचा उठकर धर्म निरपेक्षता, समानता, बंधुभाव आदि मूल्यों को आत्मसात करके राष्ट्रीय एकात्मता स्थापित किया जा सकता है।

प्राचीन काल में समाज में नैतिक मूल्यों का महत्व रहा है। महर्षि व्यास ने स्कंदपुराण में परोपकार को पुण्य कर्म कहा है–

''अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन द्वयम्।
परोपकारः पुण्याय् पापाय परपीडनम्।।''

गोस्वामी तुलसीदास ने इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है–

'परहित सहिस धरम नहीं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अघमाई।।'

आज नैतिक मूल्यों के ज्ञान को महत्व न देते हुए धनोपार्जन के वाजिब, गैरवाजिब तौर तरीकों पर बल दिया जाता है। परिणामस्वरूप समाज में आतंकवाद, पारिवारिक हिंसा, हत्या, चोरी, लूट, भ्रष्टाचार, व्यभिचार आदि हिंसक प्रवृत्तियां बढ़ रही है।

आज प्रायः हर दिन समाचार पढ़ने पर हमारे समक्ष होता है–भ्रष्टाचार, बलात्कार, हत्या, आतंकी हमले, बम विस्फोट। इन सभी समस्याओं के लिए जिम्मेदार है– खुद मनुष्य और उसका कर्म। अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित नैतिक मूल्यों का हमने अवमूल्यन कर दिया है, जिसका दुष्परिणाम हमारे सामने सामाजिक विद्रुपता के रूप में परिलक्षित हो रहा है। आज संयुक्त परिवार की जगह बिखरे परिवार ने ले लिया है। परिवार ही समाज की संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करता है। परिवार में ही ज्ञान संचय, संरक्षण एवं ज्ञान की वृद्धि होती है। आज परिवार के बिखराव होने की वजह से नई पीढ़ी संस्कारों से दूर होती जा रही है।

दूर दर्शन पर प्रदर्शित होने वाले बहुतांश कार्यक्रमों में अंग प्रदर्शन, विज्ञापन चलचित्र एवं धारावाहिकों में कम कपड़ों में दिखाए जाने वाले दृश्य बच्चों पर अच्छे संस्कार नहीं डालते हैं। मनोरंजन के नाम पर नित नये–नये बनते–बिगड़ते, बिखरते प्रसंग घरों तक परोसा जा रहा है। इलेक्ट्रॉनिक मीडीया के माध्यम से प्रसारण का आसान रास्ता मिल गया है। प्रेम के निकृष्ट स्तर को दर्शाती प्रस्तुतियों से युवा पीढ़ी दिक्भ्रमित है। हमारे देश की नई पीढ़ी विसंगतियों और विरोधाभासों के ऐसे दोराहे पर खड़ी है जहां उसे सही मार्ग नहीं दिखाई दे रहा है।

आर्थिक असमानता ने भी सामाजिक समरसता में अवरोध की स्थिति उत्पन्न की है। पूंजीपति वर्ग स्वयं के हित की अपेक्षा जनहित पर विचार करें तो अमीरी गरीबी की जो खाई दिखाई दे रही है, उसे मिटाया जा सकता है। धनी लोग स्वेच्छा से ट्रस्टीशिप के नियम का पालन कर जन साधारण के हितार्थ धन संपत्ति को लगाएँ। हमारे पूर्वज जिस ईमानदारी को अपना गौरव समझते थे आज अवसरवादी लोगों ने मिलावट करने वाले दुकानदारों ने, लालची डॉक्टरों एवं इंजीनियरों ने, बड़े अधिकारियों ने उस ईमानदारी को अपने पैरों–तले कुचल डाली है। अधिकांश पूंजीपति वर्ग स्वार्थवश अंधा हो गया है फलस्वरूप असलियत नहीं देख पा रहे हैं।

अस्पृश्यता की भावना समाज में परिव्याप्त है। समाज में उच्च और नीच का विचार घर कर गया है। अस्पृश्यता के सोच को यदि हम अपने हृदय से नहीं निकाल देते तब तक समानता की बात कैसे कर सकते है। अस्पृश्यता के संबंध में महात्मा गांधी जी के यह विचार अवलोकनीय है – '' अस्पृश्यता का मूल उद्गम धर्म नहीं है। उच्चता के खोटे अहंकारों ने ही अस्पृश्यता को जन्म दिया है। अपने से दुर्बल को हम सदैव पैरों तले दबाते रहे, इसी मनोवृत्ति से अस्पृश्यता उत्पन्न हुई है। अस्पृश्यता के संबंध में आपकी जो यह धारणा है कि यह स्वयं ईश्वर की बनाई हुई है। मैं अपने इसी विश्वास के विरूद्ध तो यहां से चेतावनी देने आया हूं कि अस्पृश्यता और दूरिता कोई दैवी रचना नहीं है। अस्पृश्यता तो कागज के नकली फूलों की भांति मनुष्य की बनाई एक कृत्रिम चीज है। ..... अस्पृश्यता को देवता ने नहीं, शैतान ने बनाया है। ..... अछूतपन जैसे कि आज हम जानते हैं वह न पूर्व का फल है न ईश्वरकृत है। आज का अछूतपन मनुष्यकृत है।''

सामाजिक समरसता को बनाये रखने में बाधा समाज के युवा पीढ़ी को निगलता मद्यपान है। मद्यपान ने कई घरों में आर्थिक संकट की स्थिति ला दी है। कई परिवार तबाह हो गया है। मद्यपान के अनेक कारण हो सकते हैं। धनवानों की तुलना में निर्धन लोग अधिक शराब पीते हैं। अतः परिवारिक बिखराव गरीब परिवार में अधिक देखने को मिलता है। मित्रता एवं आमोद–प्रमोद के रूप में मद्यपान प्रारंभ होकर विकराल रूप धारण कर लेता है, इसका मनोवैज्ञानिक कारण मानसिक परिस्थितियों को माना जाता है। जैसे–तनाव, संघर्ष, असुरक्षा के भाव, हीनता की भावना, आत्म केन्द्रीत होना, कार्य से भागने की

प्रवृत्ति आदि। मद्यपान से नैतिक मूल्यों का ह्रास होता है। अश्लील साहित्य, पत्र–पत्रिकाओं एवं व्यापारिक मनोरंजन ने भी नैतिक मूल्यों को नष्ट किया है। स्वछंदता में वृद्धि के कारण शराबवृत्ति को बढ़ावा मिलती है।

औद्योगिकीकरण ने शराबवृत्ति को बढ़ावा दिया है। यह नगरीय संस्कृति का हिस्सा बनती जा रही है। मद्यपान के वैयक्तिक कारणों में उपेक्षा, तिरस्कार, पारिवारिक कलह आदि हो सकता है। शराब का प्रयोग नगरो में बड़े–बड़े होटलों में, क्लबों, रेस्टोरेंट, नाच घरों में बढ़ता ही जा रहा है। इसके कारण व्यैक्तिक विघटन हो रहा है। शराब के ही कारण गरीबी, बेकारी, भूखमरी, मानसिक बीमारी, शारीरिक अक्षमता, दुर्घटना, दुर्व्यवहार, पारिवारिक विघटन आदि सामाजिक, आर्थिक विषमताएं जन्म लेती है। मद्यपान एक सामाजिक समस्या है और समरसता के अवरोधक है। मद्यपान शादी विवाह, मांगलिक कार्य, शुभ कार्यो के अवसरों पर भी प्रचलन में आ गया है। इसके पूर्णतया प्रतिबंध के सार्थक प्रयास होना चाहिए।

भ्रष्टाचार सामाजिक समरसता में बाधक है। भ्रष्टाचार विश्व व्यापी है। भ्रष्टाचार को रिश्वत लेने का कार्य कहा जाता है निजी लाभ के लिए सार्वजनिक संपत्ति का दुरूपयोग है। भ्रष्टाचार प्राचीन समय से चला आ रहा है। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में राजकोष से गबन किये जाने का संदर्भ दिया है। अशोक के शासन काल में भ्रष्टाचार कम पाया जाता था। फ्रांस में 15वीं शताब्दी में इग्लैण्ड को भ्रष्टाचार का गढ़ कहा जाता था। रोम में भी सार्वजनिक पदों पर चुनाव के दरम्यान रिश्वत ली जाती थी। ब्रिटिश काल में भी अफसरों द्वारा रिश्वत ली जाती थी।

भारत में भ्रष्टाचार राजनीतिक एवं व्यापार के क्षेत्र में व्याप्त है। कालाधन भी भ्रष्टाचार का एक स्वरूप है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के उन्मूलन हेतु प्रयत्न किया जाना चाहिए। संलिप्त लोगों की सार्वजनिक तौर पर भर्त्सना किया जाये साथ ही शिकायत करने वालों का नाम गोपनीय रखा जाये एवं उसे सुरक्षा प्रदान किया जाय। लोगों में नैतिक गुणों को विकसित कर उनमें चारित्रिक एवं व्यावहारिक आदर्शो को जागृत किया जाय। जन सामान्य में जागरण पैदा कर जागरूक किया जाय।

जातिवाद भारत में ज्वलंत समस्या है। जातिवाद के विकास के कारक जातीय स्थिति को ऊँचा उठाने की लालसा होती है। जातिवाद प्रजातांत्रिक मूल्यों का विरोधी है। जातिवाद राष्ट्रीय एकता की राह में बाधक है। जातिवाद के कारण भेदभाव को बढ़ावा मिलता है। सामाजिक समस्याओं का उदय जातिवादी व्यवस्था से होती है। सामाजिक समरसता के मार्ग में जातिवाद एक चुनौती है। भारत में कई जातियां निवास करती है। उनके रहन–सहन, रीति–रिवाज, खान–पान अलग–अलग है। यहां कई एक जातीय संगठन विद्यमान है। जातियों का विभेदीकृत स्वरूप विद्यमान है। जातिवाद सामाजिक गतिशीलता में अवरोधक है। जातिवाद को समाप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि व्यावहारिक एवं समुचित कानून बनाया जाना चाहिए।

साम्प्रदायिकता की भावना में स्वजातीय समूह के प्रति निष्ठा की भावना होती है। अपने जातीय समूह के हित के विषय में सोचना और कार्य करना, सम्प्रदायवाद है। मेरा सम्प्रदाय, मेरा पंथ, मेरा मत ही सर्वोकृष्ट है ऐसा मानना सम्प्रदायवाद के लक्षण है। आजकल राजनीतिक स्वार्थ के लिए साम्प्रदायिक संगठन विद्यमान है। असामाजिक तत्वों ने निहित स्वार्थ पूर्ति के लिए इसका दुरूपयोग किया है। एक दूसरे के प्रति घृणा, द्वेष, प्रतिकार, विरोध, एवं अलगाव के मनोभाव लिए साम्प्रदायिकता की आग धार्मिक असहिष्णुता फैलाने का कार्य करती है। परिणामस्वरूप समाज में तनाव एवं संघर्ष की स्थिति निर्मित हो जाती है। इसमें जन–धन की हानि के साथ ही साथ सामाजिक सांस्कृतिक विघटन भी होता है।

जनसामान्य में साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देना चाहिए जनसाधारण में जागरूकता लाकर, विचार, विमर्श कर व्यापक कार्यक्रम अपनाया जाना चाहिए। साम्प्रदायिक एकता एवं सद्भाव का प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए।

सामाजिक समरसता में अवरोधक आतंकवाद भी है। आतंकवाद एक तरह से मानव अधिकारों पर प्रहार है। आतंकवादियों के हिंसात्मक अपराध योजनाबद्ध तरीके से किया जा रहा है। जम्मू कश्मीर में आतंक के वातावरण निर्मित होने के कारण लोग घर छोड़ने को विवश हुए हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पश्चिमी जीवन दर्शन से अनुप्राणित उपभोक्तावादी संस्कृति का भारत में प्रसार, विभिन्न चैनलों के माध्यम से घर–घर में हो रहा है। आर्थिक असमानता अस्पृश्यता, नशाखोरी, औद्योगीकरण, भूमण्डलीयकरण, भ्रष्टाचार, जातिवाद, साम्प्रदायवाद एवं आतंकवाद से भारतीय समाज आहत है तथा सामाजिक आतंकवाद के दंश से समाज आहत है तथा सामाजिक सामन्जस्य एवं संतुलन के लिए अवरोधक है। उक्त विसंगतियों से निजात पाकर ही सामाजिक समरसता स्थापित कर राष्ट्र के विकास के मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *समाज शास्त्रीय चिंतक और सिद्धांतकार–डॉ. संजीव महाजन, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस 4841/24 प्रहलादगली, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली–11002*
2. *सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन–डॉ. संजीव महाजन*
3. *समाज शास्त्र–प्रो.एम.एल. गुप्ता, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा*
4. *राजनीतिक विज्ञान–डॉ. बी.एल. फड़िया, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा*
5. *सामाजिक विचारधारा–रवीन्द्रनाथ मुखर्जी, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर दिल्ली–7*
6. *सामाजिक समस्याएं–ज्योति वर्मा, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली 110002*
7. *विकीपीडिया*